
ज्वालामुखी योग - 39

अव्यक्त बापदादा :- (30.11.2006)

» _ » बापदादा को एक बात पर बहुत हंसी आ रही है। कौन सी बात? हैं महावीर लेकिन, जैसे शास्त्रों में हनुमान को महावीर भी कहा है लेकिन पूंछ भी दिखाया है। यह पूंछ दिखाया है मैं-पन का। जब तक महावीर इस पूंछ को नहीं जलायेंगे तो लंका अर्थात् पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। तो अभी इस मैं, मैं की पूंछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी।

» _ » जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या, साधारण याद नहीं।

ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है। इसीलिए ज्वाला देवी की भी यादगार है। शक्तिशाली याद। तो सुना क्या करना है? अब यह मन में धुन लगी हुई हो - समान बनना ही है, समाप्ति को समीप लाना ही है। आप कहेंगे संगमयुग तो बहुत अच्छा हैना तो समाप्ति क्यों हो ? लेकिन आपबाप समान दयालु, कृपालु, रहमदिल आत्मायें हो, तो आज की दुःखी आत्मायें और भक्त आत्माओं के ऊपर हेरहमदिल आत्मायें रहम करो। मर्सीफुल बनो।

» _ » दुःख बढ़ता जा रहा है, दुखियों पर रहम कर उन्हीं को मुक्तिधाम में तो भेजो। सिर्फ वाणी की सेवा नहीं लेकिन अभी आवश्यकता है मन्सा और वाणी की सेवा साथ-साथ हो। एक ही समय पर दोनों सेवा साथ हो। सिर्फ चांस मिले सेवा का, यह नहीं सोचो चलते फिरते अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप का परिचय देते हुए चली। आपका चेहरा बाप का परिचय दे। आपकी चलन बाप को प्रत्यक्ष करती चले। तो ऐसे सदा सेवाधारी भव! अच्छा।

➤➤ हम महावीर हैं...

➤➤ लंका ये दुनिया है..

➤➤ पूंछ में पन है...

» _ » इस मैं मैं की पूंछ को जलाना है...

→ जब ये पूंछ जलेगी, तब लंका जल जाएगी...

➤➤ मैं पन की पूंछ को कैसे जलाएंगे?

» _ » पहले पता हो किबहुत बड़ी पूंछ है...

→ तीन प्रकार के मैं पन हैं...

■ एक मैं पन कहता है, विश्व कल्याण करना है, मुझे करने है...

► जो ओटे सो अर्जुन का पुरुषार्थ करना है...

■ दूसरा मैं पन देह अभिमान का है, अहंकार का है...

■ तीसरा मैं पन है पुरुषार्थ वाला...

► मैं सिर्फ ज्योतिर्बिंदु आत्मा हूँ..

→ देह भान वाले में को जलाना है...

→ में पन का पता कैसे चले?

■ जब कोई हर्ट करे, अपमान करे, गलत आरोप लगाये, तब ये में पन जागृत होता है...

■ जब इस पूंछ को कोई खींचे तन पता चलता है...

■ उन आत्माओं के संग में जाना, जो हमसे अधिक ज्ञानी हैं...

► ज्ञानी के संग से अपनी अज्ञानता का पता चलता है...

»_ » में पन के नुक्सान का चिंतन

→ इसके कारण कितनी ठोकरे खाई हैं...

»_ » लम्बा समय अशरीरे पन का अभ्यास

→ लम्बे समय देह से अलग होने का अभ्यास

■ उस चेतना में पता चलेगा कि सारे कार्य अब तक देह भान में किये जा रहे थे...

»_ » फालो फादर करना

»_ » अपने को मेहमान समझना

»_ » अब घर जाना है, समय पूरा हुआ...

»_ » स्व दर्शन फिराना

→ स्व की यात्रा को देखना

»_ » अपने पञ्च स्वरूपों को देखना

→ निराकारी स्वरूप

→ देवता स्वरूप

→ पूज्य स्वरूप

→ ब्राह्मण स्वरूप

→ फ़रिश्ता स्वरूप

■ जिन सथितियों में देह भान नहीं है, उनका चिंतन करना...

»_ » हर घड़ी अंतिम घड़ी समझना

»_ » निमित्त भाव

»_ » स्वमान का अभ्यास

»_ » विशेषताओं को परमात्म देन समझना

»_ » बेहद में रहने का लक्ष्य रखना

»_ » में मर चुका हूँ, ये अभ्यास करना

➤➤ एक में जरूरी है सेवा के लिए पुरुषार्थ के लिए

➤➤ एक में है योग में आत्म अभिमानी स्थिति वाला

»_ » शासत्रों में तीन प्रकार के अहंकार बताये हैं...

→ तामसिक अहंकार

- आलस, निद्रा, प्रमाद है जहाँ
- अकर्मण्यता की स्थिति
- व्यक्ति सोचता रहता है, करता कुछ नहीं

→ राजसिक अहंकार

- मैं आगे जाऊं...
- मेरी बात माने

→ सात्विक अहंकार

- त्याग का मैं
- तपस्या का मैं
- योग का मैं

»→_»→ इन मैं की पूछ को जलाना है...

➤➤ रहम दिल बनना है...

»→_»→ रहमदिल बनना, उनके दुःख को महसूस करना

»→_»→ उसे दूर करने का प्रयास करना

→ रहमदिल बनने के लिए हमारी स्थिति ऊँची हो

→ हम अपने अहंकार से उपर उठे हुए हों...
